अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : छठी– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2024)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) पुरूषवेद की उत्कृष्ट स्थिति कितनी होती है-
(क) 40 कोटाकोटि सागरोपम (ख) 20 कोटाकोटि सागरोपम
(ग) 15 कोटाकोटि सागरोपम (घ) 10 कोटाकोटि सागरोपम (घ)

(ii) चौदह गुणस्थानों को कौनसा जीव प्राप्त कर सकता है-
(क) सन्नी तिर्यंच (ख) सन्नी मनुष्य
(ग) युगलिक तिर्यंच (घ) युगलिक मनुष्य (ख)

(iii) चौरेन्द्रिय जीव मिथ्यात्व मोहनीय का उत्कृष्ट बंध करते हैं-
(क) 100 सागर (ख) 50 सागर
(ग) 25 सागर (घ) 1 सागर (क)

(iv) साता वेदनीय का जघन्य स्थिति बंध करते हैं-
(क) सन्नी मनुष्य (ख) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय
(ग) त्रीन्द्रिय (घ) एकेन्द्रिय (क)

(v) तिर्यंचायु की उत्कृष्ट स्थिति परिणामों में बंधती है-
(क) अशुद्ध (ख) अर्द्धशुद्ध
(ग) विशुद्ध (घ) संक्लेश (ग)

(vi) पहली नरक से नेरइये में जीव के भेद होते हैं-
(क) 1 (ख) 2
(ग) 3 (घ) 4 (ग)

(vii) भवी जीव अभवी जीव से गुणा अधिक है-
(क) विशेषाधिक (ख) संख्यात गुणा
(ग) असंख्यात गुणा (घ) अनन्त गुणा (घ)

(viii) क्षपक श्रेणि का उत्कृष्ट विरह हो सकता है-
(क) 6 माह (ख) 24 मुहूर्त
(ग) 49 दिन-रात (घ) 6 वर्ष (क)

(ix) चारों गति का उत्कृष्ट विरह होता है-
(क) 1 समय (ख) अन्तर्मुहूर्त
(ग) 2 माह (घ) 12 मुहूर्त (घ)

(x) कम से कम कितने काल में सूर्य ग्रहण होता ही है-
(क) 12 मुहूर्त (ख) 7 अहोरात्रि
(ग) 4 माह (घ) 6 माह (घ)

(xi) विरह काल से अवस्थान काल कितना अधिक होता है-
(क) दुगुना (ख) तीन गुणा
(ग) चार गुणा (घ) 10 गुणा (क)

(xii) दिसाणुवाइ के थोकड़े का आधार है-
(क) पन्नवणा सूत्र पद-1 (ख) पन्नवणा सूत्र पद-2
(ग) पन्नवणा सूत्र पद-3 (घ) पन्नवणा सूत्र पद-4 (ग)

(xiii) वायुकाय के जीव दिशा में सबसे कम हैं-
(क) पूर्व (ख) पश्चिम
(ग) उत्तर (घ) दक्षिण (क)

(xiv) इन्द्र स्थावर का गोत्र है-
(क) त्रसकाय (ख) पृथ्वीकाय
(ग) वायुकाय (घ) वनस्पतिकाय (ख)

(xv) मनुष्य की कितनी योनि होती हैं-
(क) 7 लाख (ख) 2 लाख
(ग) 10 लाख (घ) 14 लाख (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) एकेन्द्रिय में जघन्य स्थितिबंध उत्कृष्ट से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम होता है। (हाँ)

(ii) पुरूषवेद का जघन्य स्थितिबंध दसवें गुणस्थान के चरम समय में होता है। (नहीं)

(iii) 'एकेन्द्रिय' आतप नाम का बंध मोहनीयकर्म के अनुपात में सातिया दो भाग करता है। (हाँ)

(iv) दूसरे से आठवें गुणस्थान में जघन्य बंध अन्तःकोटाकोटी सागरोपम का होता है। (हाँ)

(v) अबाधाकाल का अपवर्तन नहीं हो सकता है। (नहीं)

(vi) मनुष्य से मनुष्यिनी अधिक होती है। (हाँ)

(vii) अपर्याप्त सूक्ष्म से पर्याप्त सूक्ष्म जीव अधिक होते हैं। (हाँ)

(viii) ऐसा भी हो सकता है, जब सम्पूर्ण लोक में एक भी सम्मूर्च्छिम मनुष्य नहीं हो। (हाँ)

(ix) 4 अनुत्तर विमान का उत्कृष्ट विरह पल्योपम का संख्यातवाँ भाग होता है। (नहीं)

(x) उद्वर्तन का अर्थ प्रवेश करना होता है। (नहीं)

(xi) 12 मुहूर्त के बाद कोई न कोई जीव एक गति से दूसरी गति में उत्पन्न होता ही है। (हाँ)

(xii) दक्षिण दिशा में भवनपतियों के 4 करोड़ 60 हजार भवन हैं। (नहीं)

(xiii) वप्रा विजय एक हजार योजन गहरी है। (हाँ)

(xiv) क्षुल्लक भव औदारिक के 10 दण्ड़क में हो सकता है। (हाँ)

(xv) तिर्यंच पंचेन्द्रिय के लगातार 9 भव नहीं हो सकते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(i)	अभवी जीव	(क) 1500 वर्ष	26 प्रकृतियों की सत्ता
(ii)	सूक्ष्मत्रिक	(ख) 9 उपयोग	18 कोटाकोटी सागरोपम
(iii)	स्त्रीवेद	(ग) 1 माह	1500 वर्ष
(iv)	संज्वलन लोभ	(घ)30,000 वर्ष	40 कोटाकोटी सागरोपम
(v)	ज्ञानावरणीय-5	(च) काला वर्ण	3000 वर्ष
(vi)	खेचर पुरूष	(छ) बाजना	9 उपयोग
(vii)	प्रतिपाति सम्यग्दृष्टि	(ज) 12,000 योजन	2 गुणस्थान
(viii)	ज्योतिषी देवी	(झ) 26 प्रकृतियों की सत्ता	11 योग
(ix)	नवीन साधु	(य) चारों दिशाओं में तुल्य	15 अहोरात्रि
(x)	चौथी नरक	(र) 3000 वर्ष	1 माह
(xi)	बीसवें तीर्थंकर की आयु	(ल) 2 गुणस्थान	30,000 वर्ष
(xii)	गौतम द्वीप	(व) 15 अहोरात्रि	12,000 योजन
(xiii)	सर्वार्थसिद्ध विमान	(क्ष) 18 कोटाकोटी सागरोपम	चारों दिशाओं में तुल्य
(xiv)	वायुकाय	(त्र) 11 योग	बाजना
(xv)	प्राजापत्य स्थावर	(ज्ञ) 40 कोटाकोटी सागरोपम	काला वर्ण

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मेरा बंध नहीं होता है। मिश्र मोहनीय/समकित मोहनीय

(ii) मेरा अबाधाकाल नहीं होता है। आयुकर्म

(iii) मेरी उत्कृष्ट स्थिति बंधने पर सभी कर्मों की उत्कृष्ट स्थिति बंधती है।
मोहनीय कर्म/मिथ्यात्व मोहनीय

(iv) मेरी स्थिति जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतः कोटाकोटी सागरोपम की है। जिननाम/ आहारक चौक

(v) मेरा जघन्य बंध क्षपक श्रेणि में बंध-विच्छेद के समय 15 दिन का होता है। संज्वलन माया

(vi) हमारे बोल तभी मिलते हैं जब हम उत्कृष्ट अवस्था में विद्यमान होते हैं।
23वाँ / 24वाँ बोल/सम्मुर्छिम मनुष्य

(vii) मेरा 93 नम्बर का बोल है। अव्रती

(viii) मैं कभी मोक्ष नहीं जाऊँगा, मेरा बोल क्रमांक लिखिए। 74/अभवी

(ix) मेरा विरह नहीं होता है। 5 स्थावर

(x) प्रत्येक पानी में मेरी नियमा नहीं हो सकती। वनस्पति

(xi) हम चारों दिशाओं में एक समान होते हैं।
9वें देवलोक से सवार्थसिद्ध विमान के देवता/अवलिका प्रविष्ट विमान

(xii) हम क्रीड़ा, कौतुक के लिए मानसरोवर झील पर आते हैं। ज्योतिषी देव

(xiii) मैं भाव दिशा के अन्तर्गत 14 वाँ भेद हूँ। अकर्मभूमि

(xiv) मेरी 28 लाख कुल कोड़ी होती है। वनस्पति काय/प्राजापत्य स्थावर

(xv) मेरा संस्थान सूई की नोंक के समान होता है। तेउकाय/अग्नि/आग

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(i) अबाधाकाल को परिभाषित कीजिए।
कर्म बांधने के बाद अमुक समय तक किसी भी प्रकार के फल न देने की अवस्था को अबाधाकाल कहते हैं।

(ii) तिर्यंचायु और मनुष्यायु की उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।
तीन पल्योपम तथा करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक

(iii) संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव संज्वलन लोभ का जघन्य तथा उत्कृष्ट बंध कितना करता है ?
जघन्य- अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट- 40 कोटाकोटि सागरोपम

(iv) 6 माह का अबाधाकाल कब घटित होता है?
नारकी, देवता यदि तिर्यंचायु, मनुष्यायु का बंध करे तो अबाधाकाल छह माह का होता है।

(v) आयु कर्म के सम्बन्ध में वर्णित विविधताओं में से कोई एक बिंदु लिखिए।
नोटः इनमें से कोई भी एक मान्य-
1. यह कर्म जीवन में एक बार बंधता है। अति जघन्य परिणामों में आयु का बंध नहहीं होता तो अति विशुद्ध परिणामों में भी आयु का बंध नहीं होता। इन दोनों के मध्य में स्थित परिवर्तमान परिणाम (घोलमान परिणाम) में आयु का बंध होता है।
2. नारकी, देवता, युगलिक में 6 मास आयु शेष रहने पर तथा निरुपक्रमी मनुष्य-तिर्यंचों में वर्तमान भव की 1/3 भाग आयु शेष रहने पर बंधता है।
3. मनुष्य-तिर्यंच में सोपक्रमी आयुष्य वालों में अपनी आयु का तीसरा भाग शेष रहने पर अथवा नवाँ भाग अथवा सत्ताईसवाँ भाग अथवा इक्यासीवां भाग अथवा 243 वाँ भाग अथवा 729 वाँ भाग शेष

रहने पर अथवा अन्तर्मुहूर्त आयु शेष रहने पर आयु बांधता है।

4. चरम शरीरी जीव को छोड़कर कोई भी जीव आयुष्य कर्म का बंध किये बिना मरण को प्राप्त नहीं होता है।

5. अपर्याप्त अवस्था में मरने वाले जीव भी कम से कम तीन पर्याप्ति पूर्ण करने के बाद ही आयुष्य बांधते हैं। आयुष्य बांधने के अन्तर्मुहूर्त बाद ही काल करते हैं।

6. आयुष्य बंध करने में अन्तर्मुहूर्त काल लगता है।

(vi) 98 बोल में से जो अशाश्वत बोल हैं, उन्हें लिखिए।

24वाँ- विरह की अपेक्षा, 95वाँ-श्रेणि में विरह की अपेक्षा, 97वाँ-14वें गुणस्थान में विरह की अपेक्षा।

(vii) बोल क्रमांक 54,60,72 और 73 संबंधी ज्ञातव्य लिखिए।

50,60,72 ये निगोदिया जीवों के औदारिक शरीर की अपेक्षा से समझने चाहिए। क्योंकि उनके औदारिक शरीर असंख्यात ही होते हैं। ये बोल निगोद कहलाते हैं।

(viii) 6 काय के थोकड़े से नाम द्वार तथा संस्थान द्वार लिखिए।

नाम द्वार- इन्द्र स्थावर, ब्रह्म स्थावर, शिल्प स्थावर, सम्मति स्थावर, प्राजापत्य स्थावर, जंगमकाय।
संस्थान द्वार- मसूर की दाल, पानी के बुलबुले, सूई की नोक, ध्वजा पताका, नाना प्रकार,नाना प्रकार।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(i) एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय तक के जघन्य व उत्कृष्ट बंध में विशेषता लिखिए।

एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय तक के जघन्य व उत्कृष्ट बंध में पल्योपम के असंख्यातवें भाग का अन्तर रहता है। अर्थात् जघन्य बंध, उत्कृष्ट बंध की अपेक्षा पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम होता है।

(ii) भगवती सूत्र तथा प्रज्ञापना सूत्र में आयु का अबाधाकाल क्यों नहीं बताया? कारण लिखिए।

आयु कर्म का अबाधाकाल जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट एक करोड़ पूर्व का तीसरा भाग तथा मृत्यु के जितने समय पहले आयु बांधे उतना ही अबाधाकाल समझ लेना चाहिए। नरकादि की जितनी आयु बताई, उससे जितनी बंध-स्थिति अधिक है, उतना ही अबाधाकाल स्पष्ट हो जाने से सूत्रकार ने नहीं बताया।

(iii) सातावेदनीय के भेद, स्थिति तथा अबाधाकाल लिखिए। (सन्नी पंचेन्द्रिय की अपेक्षा से)

सातावेदनीय के दो भेद- साम्परायिक और ईर्यापथिक।
साम्परायिक की स्थिति- जघन्य स्थिति 12 मुहूर्त की, उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की है।
अबाधाकाल- 1500 वर्षों का हैं। ईर्यापथिक की स्थिति दो समय की है, अबाधाकाल नहीं होता है।

(iv) एकेन्द्रिय जीव से समुच्चय जीव तक की केवल अल्पबहुत्व लिखिए।

बोल	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
एकेन्द्रिय जीव विशेषाधिक	4	1	5	3	4
तिर्यंच जीव विशेषाधिक	14	5	13	9	6
मिथ्यादृष्टि जीव विशेषाधिक	14	1	13	6	6
अव्रती जीव विशेषाधिक	14	4	13	9	6
सकषायी जीव विशेषाधिक	14	10	15	10	6
छद्मस्थ जीव विशेषाधिक	14	12	15	10	6
सयोगी जीव विशेषाधिक	14	13	15	12	6
संसारी जीव विशेषाधिक	14	14	15	12	6
समुच्चय जीव विशेषाधिक	14	14	15	12	6

(v) बोल क्रमांक 82,84 व 88 संबंधी ज्ञातव्य लिखिए।

बोल क्रमांक 82,84,88 सूक्ष्म व साधारण वनस्पतिकाय के जीवों अर्थात् निगोदिया जीवों की अपेक्षा

से समझने चाहिए, क्योंकि इन तीनों बोलों में निगोदिया जीव अनन्त-अनन्त होते हैं।

(vi) सम्मूर्च्छिम मनुष्य तथा भवसिद्धिया की अल्पबहुत्व तथा इनमें जीव के भेद, गुणस्थान आदि लिखिए।

बोल	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा	1	1	3	4	3
भवसिद्धिया विशेषाधिक	14	14	15	12	6

(vii) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत क्यों नहीं होते ? कारण लिखिए।

सन्नी (गर्भज) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्कृष्ट विरह बारह मुहूर्त का होता है। उनकी अपर्याप्त अवस्था की स्थिति अन्तर्मुहूर्त की होती है। अपर्याप्त अवस्था की स्थिति से विरहकाल की स्थिति अधिक होने के कारण सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत नहीं हो सकते।

(viii) 9 ग्रैवेयक से सर्वार्थसिद्ध विमान तक के देवों का जघन्य तथा उत्कृष्ट विरह लिखिए।

नाम	जघन्य	उत्कृष्ट
9 ग्रैवेयक पहली त्रिक (1-3)	1 समय	संख्यात सैंकड़ों वर्षों का
दूसरी त्रिक(4-6)	1 समय	संख्यात हजार वर्षों का
तीसरी त्रिक(7-9)	1 समय	संख्यात लाखों वर्षों का
4 अनुत्तर विमान	1 समय	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
सर्वार्थसिद्ध विमान	1 समय	पल्योपम का संख्यातवाँ भाग